पाठ 6 **फरवरी 3-9**

एक प्रबंधक (भण्डारी) के चिह्न

सब्त अपराह्न **फरवरी 3**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिए पढ़ें: इब्रा० 11: 8-12; रोम० 4: 13, 18-21; मत्ती 6: 24; इब्रा० 9: 14; 1यूहन्ना 5: 2, 3; लूका 16: 10-12.

याद वचन: *"मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे। फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है, कि विश्वास योग्य निकले" (1कुरिं० 4: 1-2)।*

भण्डारी अपने चिह्न, या विशिष्ट छाप के द्वारा जाने जाते हैं वैसा ही जैसा खुदरा व्यापारी अपने चिह्न या ब्रॉण्ड नाम से जाने जाते हैं। वास्तव में बहुत से लोग विक्रय छाप में स्वयं को तब्दील कर प्रसिद्ध हो जाते हैं।

एक मसीही भण्डारी की छाप या चिह्न संबंध के द्वारा मसीह के प्रेम का एक प्रतिबिम्ब है जो उसके लिये उसके साथ है। जब हम मसीह के गुणों को जीते और अभ्यास करते हैं, हमारा जीवन हमारी छाप को प्रकट करेगा। हमारी छाप उसकी छाप है; हमारी पहचान उसकी पहचान के साथ मिल जाती है (1कुरि० 6: 17)।

इस सप्ताह हम परमेश्वर के भण्डारियों के चारित्रिक विशेषताओं की पहचान पर निगाह डालते हैं जो उनके ब्रॉण्ड नाम का गठन करते हैं। ये विशेषताएँ हमें यीशु के पुनरागमन की आशा करने और उसकी सच्चाई के विश्वस्त भण्डारियों के तौर पर हमें सौंपे गये काम को करने को प्रेरित करती हैं। प्रत्येक गुण एक गहरे संबंध को वर्णन करता है जो उसके साथ हमारा हो सकता है जो खोये हुओं को ढूँढ़ने और बचाने आया। जितनी अधिक इन विशेषताओं का अध्ययन होता है उतनी ही गहराई से वे हमारे जीवनों में गहराई से समा जाती हैं। परमेश्वर का प्रेम का चरित्र, इसकी सभी गतिशीलता में, हमारी छाप बनेगा और हमारे जीवन के हर पहलू पर एक प्रभाव आज और अनंत काल के लिये होगा।

रविवार **फरवरी 4**

निष्ठा

"फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है, कि विश्वास योग्य निकले" (1कुरिं०4: 2), युद्ध करना और जीतना "विश्वास की अच्छी कुश्ती" (1तीमु०

- सब्त फरवरी 10 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

6: 12) एक विश्वस्त भण्डारी के लिये आवश्यक है। "विश्वस्त" वह है जो परमेश्वर है और हम में कार्य करते हुए उसके द्वारा जो हम होना चाहते हैं। विश्वस्त होने का अर्थ है सत्य में बने रहना जो हम जानते हैं कि सही है, खासकर आत्मिक लड़ाईयों के ताप में।

सही और गलत, भलाई और बुराई के बीच आत्मिक संघर्ष अवश्य आयेगा। ये विश्वास की लड़ाई के भाग हैं। निर्णय जो हर परिस्थिति में भण्डारियों को चिन्हित करता है, वह विश्वस्त होने का चुनाव करना है। 'यदि आप दौलत से प्रेम करते हैं, निश्चित हो जाएँ कि आप परमेश्वर के प्रति विश्वस्त रहेंगे और रुपये के प्रति प्रेम के खतरे के विषय वह जो कहता है। यदि आप लोक प्रियता की चाहत रखते हैं, नम्रता के विषय परमेश्वर का वचन जो कहता है उस पर विश्वस्त रहें। यदि आप कामुक विचारों के साथ संघर्ष करते हैं, पवित्रता की प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वस्त रहें। यदि आप सामर्थ्य चाहते हैं, सबों के सेवक होने के विषय परमेश्वर जो कहता है उसपर विश्वस्त रहें। विश्वस्त होने या अविश्वस्त होने का चुनाव अकसर सेकेंडों में कर लिया जाता, जौभी कि परिणाम चिरकालिक भी हो सकते हैं।

पढ़ें इब्रानियों 11: 8-12,17-19, और रोमियों 4: 13, 18-21, विश्वस्त होने के विषय में ये पदस्थल हमें क्या सिखलाते हैं?

_____

_____

_____

इब्रानी भाषा में "विश्वस्त" का अर्थ है भरोसा करना। वही इब्रानी मूल हमें "आमीन" शब्द देता है, और निश्चय इसका अर्थ "मजबूत" या "दृढ़" होता है। विश्वासनीयता का अर्थ है हमने परखा और जाँचा है, और परमेश्वर की योजना के लिये दृढ़तापूर्वक समर्पित हैं।

कैसर के सामने बोलने की तैयारी करते हुए सुधारक मार्टिन लूथर ने "परमेश्वर के वचन को पढ़ा अपने लेखों पर निगाह डाली, और सुनियोजित तरीके से जवाब का खाका तैयार किया .....वह पवित्रशास्त्र के नजदीक खींचा चला गया .....और भावुकता में अपने बायें हाथ को पवित्र ग्रन्थ पर रखा, और अपने दाहिने हाथ को स्वर्ग की ओर उठाया, सुसमाचार के प्रति विश्वस्त रहने की शपथ खाई, और स्वतंत्रतापूर्वक अपने विश्वास का अंगीकार किया, इतना तक कि अपनी गवाही के लिये अपने खून ही से उसे मुहर क्यों न लगानी पड़ती।"– जे० ए०मर्ल डी' ओबिग्ने, हिस्ट्री ऑफ द रिफोर्मेशन, वॉल्यूम 2, बुक 7, पेज 260।

पढ़ें प्रकाशित वाक्य 2: 10; हमारी प्रति दिन की परमेवर के साथ यात्रा में शब्द "प्राण देने तक विश्वासी रह" हमें क्या अर्थ देता है?

सोमवार **फरवरी 5**

वफादारी

"कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, व एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; "तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते" (मत्ती 6: 24), परमेश्वर के प्रति वफादारी के सर्वोच्च महत्त्व के विषय यह पद हमें क्या सिखलाता है?

यह जानकर कि परमेश्वर के नाम का अर्थ है "जलनशील" (निर्ग० 34: 14) यह हमें वफादारी के लिये एक जोर की आवाज देता है। एक "जलनशील" परमेश्वर के प्रति वफादारी उसके प्रेम में वफादारी है। विश्वास की लड़ाई में वफादारी परिभाषित करने में मदद करती है कि हम कौन हैं और लड़ाई में डटे रहने को हमें प्रोत्साहित करती है।

हमारी वफादारी परमेश्वर के लिये खास है (1राजा 8: 61), यह कोई संविदा (ठेका) नहीं है जो हर संयोग का पूर्वानुमान लगाये; न ही यह मात्र नियमों की एक सूची है। वरन यह हमारे व्यक्तिगत विश्वास, भरोसा, और संकल्प की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है।

पढ़ें 1इतिहास 28: 9, वफादारी की महत्ता के विषय में यह पदस्थल हमें क्या सिखाता है?

यद्यपि, यहाँ पर वफादारी है, वहाँ पर विश्वासघात की संभावना है। वफादारी प्रेम की तरह मुफ्त प्रदान की जानी चाहिए, अन्यथा यह सच्ची वफादारी नहीं है। युद्ध में कभी-कभी अगली पंक्ति के सैन्य दस्ते को डटे रहने और लड़ाई करने को बाध्य किया जाता है; नहीं तो उनके उच्चाधिकारी उन्हें गोली मार सकते हैं। इन लोगों को अपना कर्त्तव्य निभाना है, परन्तु यह जरूरी नहीं है कि यह वफादारी के कारण हो। परमेश्वर हम से उस प्रकार की वफादारी की मांग नहीं करता है।

अय्यूब पर निगाह डालें। उसने विनाशकारी घटनाओं का अंदाजा नहीं लगाया जो उसके परिवार, सम्पत्ति, और स्वस्थ्य को बर्बाद कर सकती थी। वह भरोसा, प्रेम, और वचनबद्धता को छोड़ सकता था, परन्तु परमेश्वर के प्रति

उसकी वफादारी नैतिकता का मजबूत चुनाव था। खुले तौर पर परमेश्वर की महिमा के लिये ईमानदार और निडर, उसने प्रसिद्ध वचनों को कहा "वह मुझे घात करेगा, मुझे कुछ आशा नहीं; तौभी मैं अपनी चाल चलन का पक्ष लूंगा" (अय्यूब 13: 15) तबाही के मुख में उसकी ईमानदारी, वफादारी का गुण है, और यह वफादार भण्डारियों को उनकी बेहतरी पर व्याख्या करता है।

अपने आप से पूछें: मैं परमेश्वर के प्रति कितना वफादार हूँ जो मेरे लिये मरा? किस तरीके से मैं उस वफादारी को बेहतर प्रकट कर सकता हूँ?

मंगलवार **फरवरी 6**

स्पष्ट विवेक

बहुत-सी मूल्यवान चीजें हैं जिसके हम मालिक हो सकते हैं। स्वास्थ्य, प्रेम, मित्रगण, एक विशाल परिवार- ये सब आशीषें हैं। परन्तु शायद सबसे महत्त्वपूर्ण एक स्पष्ट चेतना है।

पढ़ें इब्रानी 10: 19-22 एवं 1तीमु० 4: 1-2, "बुरी चेतना" होने का क्या अर्थ है और "गर्म लोहे से दागी गई चेतना" का क्या अर्थ है?

_____

_____

हमारी चेतना हमारे बाहरी जीवनों का एक आंतरिक निरीक्षक के तौर पर कार्य करती है। एक चेतना को एक उच्च एवं पूर्ण मानदंड: परमेश्वर की व्यवस्था में संलग्न होने की जरूरत है। परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को आदम के हृदय में लिख दिया, परन्तु पाप ने लगभग इसे मिटा डाला- केवल उस पर ही नहीं लेकिन उसकी संतानों पर भी ऐसा ही हुआ। केवल व्यवस्था की टुकड़ियाँ रह गईं। "वे व्यवस्था की बातें अपने-अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं और उनके विवेक भी गवाही देते हैं, और उनके विचार परस्पर दोष लगाते या उन्हें निर्दोष ठहराते हैं" (रोम० 2: 15), जहाँ आदम असफल हुआ यीशु सफल होता है क्योंकि परमेश्वर की व्यवस्था "उसके हृदय में थी" (भजन० 40: 8)।

बुरी चेतना पर हमारे एकमात्र समाधान पर पौलुस क्या कहता है? देखें इब्रा० 9: 14.

_____

_____

"चेतना के गुप्त मकड़ जाल में घुसना है। पृथ्वी की ओर से आत्मा की खिड़कियों को बन्द करना है और स्वर्ग की ओर खोलना है ताकि धार्मिकता के सूर्य की चमकदार किरणें मुफ्त प्रवेश करें..... मन को साफ और शुद्ध रखना

है ताकि यह भलाई और बुराई के बीच फर्क कर सके।"– एलेन जी० ह्वाईट, माइन्ड, करैक्टर, एण्ड पर्सनालिटी, वॉल्यूम 1, पेज 327, जब परमेश्वर की व्यवस्था विश्वासी के हृदय में अंकित की जाती है (इब्रा 8:10), और विश्वासी विश्वास के द्वारा उस व्यवस्था को अनुसरण करने की इच्छा करता है, एक साफ चेतना संभावित परिणाम होता है।

यदि आपने एक दोषी अंत:करण के तनाव के अधीन कभी संघर्ष किया है तो, आप जानते हैं यह कितना भयंकर हो सकता है, यह किस प्रकार एक अविरल मौजूदगी हो सकता है, जो आपको कभी राहत नहीं देता। एक दोषी अंत: करण के अभिशाप से आपको बचाने के लिये, यीशु पर केन्द्रित करना, आप और आप के पाप के लिये क्रूस पर उसकी मृत्यु कैसे मददगार हो सकती है?

बुधवार **फरवरी 7**

आज्ञापालन

हाबिल ने आज्ञाकारिता के साथ अपनी वेदी के पास बलि के मेमने को पकड़े हुए परमेश्वर की आज्ञानुसार घुटने टेके। दूसरी ओर कैन ने आगबबूला होकर, अपनी वेदी के पास फल पकड़कर घुटने टेके। दोनों भेंट लाये, तौभी केवल एक ही भाई परमेश्वर की आज्ञा के प्रति आज्ञाकारी रहा। बलि किया मेमना ग्रहण किया गया, परन्तु भूमि की उपज अस्वीकृत हुई। दोनों भाईयों ने बलिदान की भेंट के विषय निर्देशों और अर्थ को समझा, परन्तु जो परमेश्वर का आदेश था, केवल एक ने माना (उत्प० 4:1-5)।

"हाबिल की मृत्यु, आज्ञापालन के स्कूल में परमेश्वर की योजना को ग्रहण करने से कैन के इनकार करने का परिणाम थी, यीशु मसीह के लहू से बचाया जाना, प्रतीक स्वरूप बलि की भेंट द्वारा मसीह को इंगित करता था। कैन ने मेमने की कुरबानी को इंकार किया, जो मसीह के खून का प्रतीक था जो संसार के लिये बहाया जाना था।"– एलेन जी०ह्वाईट कॉमेन्ट्स, द एस०डी०ए० बाईबल कॉम्मेन्ट्री, वॉल्यूम 6, पेज 1109.

आज्ञा पालन मन में शुरू होता हैं यह एक उच्चत्तर आज्ञा से आदेशों को मानने की, मानसिक तौर से ग्रहण करने की जिम्मेदारी की कोमल प्रक्रिया को शामिल करता है। आज्ञापालन एक आदेश चिह्न और उस चिह्न को मानने की इच्छा के साथ एक संबंध से उत्पन्न होता है। परमेश्वर से हमारे संबंध के मामले में हमारा आज्ञापालन एक स्वैच्छिक, प्रेमपूर्ण कार्य है जो हमारे व्यवहार को नैतिक ऐहसानों में ढाल देता है। परमेश्वर के प्रति आज्ञा पालन वैसा ही खास होना

चाहिए जैसा वह निर्देशित करता है, और केवल वैसा नहीं जैसा हम सोचते या इच्छा करते हैं कि इसे होना चाहिए। कैन का मामला सबके लिये एक पूर्ण उदाहरण है जो परमेश्वर के आदेश की बजाय स्वयं की इच्छा पूरी करता है।

पढ़ें 1यूहन्ना 5: 2-3 एवं रोमियों 1: 5; 10: 16-17, मसीहियों के लिये आज्ञापालन के अर्थ के विषय में ये पदस्थल हमें क्या सिखलाते हैं, व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा कौन बचाया जाता है?

_____

_____

_____

हम बचाये जाने के लिये आज्ञा पालन नहीं करते; हम आज्ञापालन इस लिये करते हैं कि हम पहले ही बचाये जा चुके हैं। आज्ञापालन एक नैतिक विश्वास की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। शमूएल ने शाऊल से कहा "क्या यहोवा होमबलियों, और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन मानना तो बलि चढ़ाने और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है" (1शमू० 15: 22)।

"मानना तो बलि चढ़ाने से उत्तम है" से शमूएल का क्या तात्पर्य था? मसीहियों के तौर पर वह हमें क्या बतलाना चाहिए जो हमें सस्ते अनुग्रह के झूठे सुसंवाद में न गिरने में हमें मदद कर सके?

बृहस्पतिवार **फरवरी 8**

विश्वास योग्य

पढ़ें लूका 16: 10-12, विश्वासयोग्य होने के विषय में यह हमें क्या सिखलाता है? एक विश्वस्त भण्डारी के लिये यह विशेषता क्यों इतनी महत्त्वपूर्ण है?

_____

_____

विश्वसनीयता का यह सिद्धांत पूरी बाईबल में दिखाई देता है। उदाहरणार्थ, एक कहानी में चार मुख्य लेवी द्वारपालों को रात के समय में पुराने नियम के पवित्र स्थान की सुरक्षा सौंपी गई थी। उन्हें खजाने से पूर्ण कमरों की सुरक्षा करनी थी और प्रत्येक सुबह दरवाजों को खोलने की चाबियाँ पकड़नी थी (1इति० 9: 26-27), उन्हें यह काम दिया गया क्योंकि वे विश्वासयोग्य समझे गये।

विश्वासयोग्य होना एक अच्छे भण्डारी की एक विशेषता है। इसका अर्थ यह होता है कि विश्वासयोग्य भण्डारी अपनी भूमिका के गहरे मतलब

को समझते हैं; वे समझते हैं कि परमेश्वर विश्वास योग्य है, और वे वैसा ही होने को लक्ष्य बनाएँगे (व्यवस्था वि० 32:4, 1राजा 8:56)।

विश्वसनीयता चरित्र विशेषताओं के एक विकसित ढाँचे को सूचित करता है। यह चरित्र और योग्यता का उच्चतम स्तर है जिसे एक व्यक्ति निरीक्षकों की देख-रेख में प्राप्त कर सकता है। परमेश्वर के चरित्र को प्रतिबिम्बित करने का तात्पर्य है आप करेंगे जो आप कहते हैं कि आप कर सकते हैं, परिस्थितियों से बेपरवाह या लोग जो आप को अन्यथा करने के लिये दबाव देते हैं (2राजा 12:15)।

दानिएल दो विश्व राष्ट्रों के राजाओं द्वारा विश्वासयोग्य गिना गया। उसकी प्रसिद्धि अपने सम्पूर्ण जीवन काल में एक विश्वासयोग्य सलाहकार के तौर पर जिसने निडरतापूर्वक ज्ञान और सत्य राजाओं को बाँटा जो दरबारी ज्योतिषियों और जादूगरों के प्रत्यक्ष विरोध में था। विश्वसनीयता नीतिशास्त्र का ताज रतन है; यह आपके नैतिक सिद्धान्तों को अपने विशुद्ध रूप में प्रदर्शनी में डाल देता है। एक भण्डारी में यह गुण रातभर में प्रकट नहीं होता परन्तु लम्बे समय तक छोटी चीजों में भी विश्वस्त रहने के द्वारा आता है।

दूसरे हमारी विश्वसनीयता को देखते हैं। वे हमारी कद्र करते हैं और हमपर निर्भर होते हैं क्योंकि वे जानते हैं हम सहज ही विचारों सनकों, या चापलूसी में झुकते नहीं हैं। इस प्रकार विश्वासयोग्य होना प्रत्येक जिम्मेदारी में जो इस पृथ्वी पर प्रचलित है चरित्र क्षमता का एक प्रदर्शन है, जो स्वर्ग के लिये उपलब्ध आधार है। "हमें मसीह के राज्य की वफादार, विश्वासयोग्य प्रजा होना है, कि उन्हें जो सांसारिक तौर पर बुद्धिमान हैं दौलत, भलाई, दया, कोमलता और परमेश्वर के राज्य के नागरिकों की कृपा का एक सत्य प्रतिनिधित्व करना है।"- एलेन जी० ह्वाईट, टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 6, पेज 190.

किसी के विषय सोचें जिसे आप व्यक्तिगत रूप से जानते हैं जो विश्वासयोग्य है। उस व्यक्ति से आप क्या सीख सकते हैं जो आप को भी अधिक विश्वासयोग्य बनने में मदद करे?

शुक्रवार **फरवरी 9**

अतिरिक्त विचार: एक अच्छे भण्डारी का दूसरा चिह्न व्यक्तिगत जवाबदेही है।

"यह हमेशा से यीशु से मनुष्य की ओर लोगों के मनों को खींचने की शैतान की करामात रही है, और व्यक्तिगत जवाबदेही को नष्ट करना है। शैतान ने परमेश्वर के पुत्र को जब परीक्षा में डाला अपनी करामात में असफल रहा;

परन्तु वह बेहतर सफल हुआ जब वह पतित मानव के पास आया। मसीहियत विकृत हो गई।"- एलेन जी० ह्वाईट, आर्ली राईटिंग्स, पेज 213.

मसीह के साथ हमारे अस्तित्व के केंद्र में हम उसके मार्ग दर्शन में खुले हैं। परिणामस्वरूप हमारा विश्वास, वफादारी, आज्ञापालन, साफ अंत:करण, विश्वसनीयता, और व्यक्तिगत जवाबदेही हमारे जीवनों में प्रकट होगा। इस प्रकार भण्डारियों के तौर पर हम परमेश्वर के हाथों में पूर्ण बनते हैं (भजन० 139: 23,24)।

व्यक्तिगत जवाबदेही एक आवश्यक बाईबलीय सिद्धांत है। संसार में यीशु व्यक्तिगत रूप से पिता के प्रति जवाबदेह था (यूहन्ना 8: 28)। हम प्रत्येक व्यर्थ बात के लिये जवाबदेह हैं (मत्ती 12: 36)। "इसलिये जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा" (लूका 12: 48)। व्यक्तिगत जवाबदेही के लिये सबसे बड़ा खतरा है हमारी जिम्मेदारियों को किसी अन्य पर डालने की प्रवृति। "मन में यह उपजना चाहिए कि यह हमारी स्वयं की सम्पत्ति नहीं है जिसे हमें निवेश हेतु सौंपा गया है। यदि यह होती, हम विवेक अधीन शक्ति का दावा करते; हम दूसरों पर अपनी जिम्मेदारी को डालते, और हमारा भण्डारीपन उनके साथ छोड़ते। पर यह हो नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर ने हमें व्यक्तिगत रूप से अपना भण्डारी नियुक्त किया है।" एलेन जी० ह्वाईट, टेस्टीमोनी फॉर द चर्च, वॉल्यूम 7, पेज 177.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न:

1. एक भण्डारी के विभिन्न चिह्नों पर निगाह डालें जिसे हमने इस सप्ताह अध्ययन किया: यथा व्यक्तिगत जवाबदेही, विश्वसनीयता आज्ञापालन, वफादारी, एक साफ अंत:करण एवं निष्ठा। एक दूसरे से ये कैसे संबद्ध होते हैं ? किस प्रकार एक क्षेत्र में लापरवाही दूसरे क्षेत्र में लापरवाही की ओर अगुवाई करती है? अथवा किस प्रकार एक क्षेत्र में निष्ठा दूसरे क्षेत्र में निष्ठा की ओर अगुवाई करती है?
2. उसपर अधिक चिंतन करें किस प्रकार सुसमाचार की प्रतिज्ञाएँ उन्हें मदद कर सकती हैं जो एक दोषी अंत:करण के साथ संघर्ष कर रहे हैं। वे कौन-सी प्रतिज्ञाओं का दावा कर सकते हैं?
3. हम अकसर "वफादारी" के विचार को स्वयं में अच्छाई के तौर पर परखते हैं। पर क्या यह हमेशा ही ऐसा होता है? किस तरीके से यह संभव है कि जो अच्छा नहीं है उसके प्रति वफादार रहा जाए? तब क्यों "वफादारी" के विचार को एक विशेष संदर्भ में हमेशा समझा जाना चाहिए, देखने के लिये कि यदि यह वफादारी अच्छी है अथवा अनुपयुक्त है?